अध्याय – एक
पत्रकारिता का इतिहास

उद्देश्य–

इस अध्याय का उद्देश्य सूचनाओं के आदान–प्रदान के लिए विश्व में पत्रकारिता की शुरूआत और उसके बाद भारत में पत्रकारिता से पूर्व मुद्रण कला के विकास के बाद पहले धार्मिक प्रकाशन और बाद में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ समाचारपत्रों के माध्यम से वैचारिक आंदोलन के इतिहास से अवगत कराना है। भारत में स्वतंत्रता से पूर्व आंदोलन से जुड़े प्रमुख नेतृत्व द्वारा प्रकाशित समाचारपत्रों और उस समय पत्रकारिता की स्थिति से अवगत कराना है। स्वतंत्रता के पश्चात पत्रकारिता की यात्रा की संक्षिप्त जानकारी के साथ चर्चित समाचारपत्रों के प्रकाशन और उनके बंद होने के कारणों की जानकारी देना है।

1.1 प्रस्तावना

पत्रकारिता का उद्भव और विकास रोचक रहा है दैनन्दिन जीवन में कोई अंश ऐसा नहीं है जो पत्रकारिता से अछूता रहा हो। पत्रकारिता के इतिहास पर दृष्टि डालें तो इसके विकास में यूरोप अग्रणी रहा है। ब्रिटेन, फ्रांस, हॉलैण्ड, जर्मनी जैसे कई देशों में पत्रकारिता के विकास से समूचे विश्व की पत्रकारिता प्रभावित हुई है। भारत में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पत्रकारिता का योगदान अविस्मरणीय है। 40 के दशक में भारत में प्रचलित अनेक कुरीतियों की रोकथाम के लिए पत्रकारों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।

1.2 विश्व पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास

पत्रकारिता का उद्भव सहज जिज्ञासा और निरंतर खोज की प्रवृत्ति का नतीजा है। अपनी निष्पक्षता और निर्भीकता के कारण ही पत्रकारिता लोकतंत्र के सशक्त माध्यम के रूप में उभरकर आम जनता के सम्मुख प्रस्तुत हुई।

अंग्रेजी के महत्त्वपूर्ण साहित्यकार एडीसन ने पत्रकारिता के बारे में कहा था कि– 'पत्रकारिता से अधिक मनोरंजक, अधिक चुनौतीपूर्ण, अधिक रसमयी और अधिक जनहितकारी कोई दूसरी बात मुझे दिखाई नहीं देती।

एक स्थान पर बैठकर प्रतिदिन हजारों–लाखों लोगों तक पहुँच जाना, उनसे अपने मन की बात कह देना, उन्हें सलाह देना, शिक्षा देना–परामर्श देना, उन्हें विचार देना, उनका मनोरंजन करना, उन्हें जागरूक बनाना सचमुच बेहद आश्चर्यजनक होता है।'

वस्तुतः कागज और मुद्रण का आविष्कार सर्वप्रथम चीन में हुआ और फिर यह कला यूरोप तक पहुँची। ऐसा माना जाता है कि चीन में ही सबसे पहला समाचार पत्र निकला जिसका नाम 'पेकिंग गजट' अथवा 'तिंचाओ' था। यूरोप में पहली प्रेस की स्थापना सन् 1440 में हुई। जर्मनी के गुटेनबर्ग नामक एक व्यक्ति ने इस प्रेस को स्थापित किया था। यह भी माना जाता है कि इंग्लैंड में

कैक्सटन ने 1477 में प्रेस स्थापित की। इंग्लैंड का पहला समाचार–पत्र 1603 में प्रकाशित हुआ था और इसका आकार बहुत छोटा था। सन् 1666 में लंदन गजट प्रकाशित हुआ। यह सप्ताह में दो बार छपता था।

विश्व में सबसे पहला समाचारपत्र यूरोप से निकला। हालैंड में 1526 में पहला समाचारपत्र प्रकाशित हुआ । इसके बाद 1610 में जर्मनी में, 1622 में इंग्लैंड में, 1660 में अमेरिका में, 1703 में रूस में, और 1737 में फ्रांस में पहला पत्र निकला। इंग्लैड में 'पोस्टमैन' नाम से पहला साप्ताहिक समाचार पत्र 21 सितंबर 1622 को लन्दन से निकला। उसके 80 साल बाद लंदन से ही 11 मार्च 1702 को पहला दैनिक पत्र प्रकाशित हुआ। जिसका नाम 'डेली करेंट' था।

आधुनिक विश्व में तमाम जनक्रान्तियों में पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। चाहे अमेरिका की आजादी की लड़ाई हो या भारत का स्वाधीनता संग्राम, अफ्रीका में जातीय स्वतंत्रता का मोर्चा हो या एशियाई देशों के आंतरिक मसले, हर जगह पत्रकारिता ने राष्ट्रीयता से ऊपर उठकर वैश्विक दृष्टिकोण को सामने रखा और जन अभिव्यक्ति का साथ दिया।

लंदन के 'दि टाइम्स' पत्र की स्थापना 1785 में हुई। 1881 में 'गार्जियन' की शुरुआत हुई, जो 'मैनचेस्टर गार्जियन' के नाम से विख्यात था 'डेली टेलीग्राफ' की 1855 में, 'ईवनिंग न्यूज; 1881 में, 'फाइनेंशियल टाइम्स' 1888 में, 'डेली मेल' 1896 में, 'डेली एक्सप्रेस' 1900 में, 'डेली मिरर' 1903 में शुरु हुए। रविवारीय पत्रों में 'आब्जर्वर' 1791 में, 'न्यूज ऑफ दि वर्ड' 1853 में, 'संडे टाइम्स' 1822 में, 'संडे पीपल' 1881 में शुरू हुए। पत्रकारिता के एक रूप को रोमन गणराज्य के जन्म के साथ विकसित हुआ माना जा सकता है। रोमन साम्राज्य में संवाद लेखकों की व्यवस्था के प्रमाण मिलते हैं। ईसा से पाँचवीं शताब्दी पूर्व ये संवाद लेखक हाथ से लिख कर समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया करते थे। इसके उपरांत जूलियस सीजर ने 60 ई. पू 'एक्टा डोएना' नाम से दैनिक बुलेटिन निकाला जो राज्य की जरूरी सूचनाओं का एक हस्तलिखित पोस्टर होता था। भारतीय इतिहास में अशोक ने सुदृढ़ शासन व्यवस्था को कायम रखने के लिए विशेष प्रयत्न किए। राजकार्य के कुशल संचालन के लिए उपयोगी सूचनाएँ विभिन्न स्रोतों से प्राप्त करने हेतु व्यवस्था की थी साथ ही शिलालेखों की परम्परा ने भी इसे आगे बढ़ाया।

आज से करीब 1350 वर्ष पूर्व चीन में विश्व का पहला पत्र 'तिंचाओं' शुरू हुआ था। यह हस्तलिखित पत्र था। विश्व का सबसे पुराना नियमित समाचार पत्र स्वीडन का 'पोस्ट ओच इनरिक्स ट्रिडनिंगर' था जिसे रायल स्वीडिश अकादमी ने 1644 में छापना शुरू किया था। विश्व का सबसे पुराना व्यावसायिक समाचार पत्र 8 जनवरी 1658 को हालैंड में 'बीकेलिक कूरंत बात यूरोप' नाम से शुरू हुआ था। आज इसका नाम 'हार्लेक्स दोगब्लेडे हारलमेशे कूरंत' है। छापेखाने के आविष्कार के बाद प्रारम्भिक मुद्रक एक कागज पर समाचार छाप कर फेरी वालों को मुफ्त में दे देते थे। विश्व का पहला दैनिक समाचार पत्र 'मार्निंग पोस्ट' था, जो 1772 में लंदन से प्रकाशित होना शुरू हुआ था। इसके कुछ ही दिनों बाद लन्दन से ही 'टाइम्स' नामक समाचार पत्र प्रकाशित होना शुरू हुआ।

1.3 आजादी से पूर्व विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता

भारत में हिन्दी पत्रकारिता जिस प्रकार विभिन्न चरणों में विकसित हुई, उसी तरह विदेशों में भी प्रवासी भारतीयों द्वारा इसके विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किए। विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता का जन्म सन् 1883 में माना जाता है। कहा जाता है कि लन्दन से 'हिन्दुस्तान' नामक त्रैमासिक पत्र का प्रकाशन

प्रारम्भ हुआ था। इसके संस्थापक राजा रामपाल सिंह थे। यह त्रिभाषी रूप में प्रकाशित होता था और इसमें हिन्दी के साथ उर्दू तथा अंग्रेजी का अंश भी रहता था। दो वर्ष तक वहाँ से प्रकाशित होने के बाद 1885 में यह पत्र कालाकांकर (अवध) से प्रकाशित होना शुरू हुआ। 1887 में इसका स्वरूप दैनिक हो गया। अमृतलाल चक्रवर्ती, शशिभूषण चक्रवर्ती, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, गोपाल राम गहमरी, लालबहादुर, गुलाब चन्द चौबे, शीतल प्रसाद उपाध्याय, रामप्रसाद सिंह तथा शिवनारायण सिंह इसके सम्पादक रहे। 1857 के गदर का प्रभाव अप्रवासी भारतीयों पर भी पड़ा। ओरोगन राज्य के पोर्टलैंड में भारतीयों ने 'हिन्दी एसोसिएशन' नाम की एक संस्था बनाई। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लाला हरदयाल ने इस संकल्प की पहल की।

1857 की क्रांति को जीवित रखने के लिए अमेरीका से विभिन्न भारतीय भाषाओं का एक अखबार 'गदर' नाम से 1 नवम्बर 1913 में प्रकाशित हुआ। इस पत्र ने ब्रिटिश राज्य के शोषण का कच्चा चिट्ठा खोलते हुए सशस्त्र क्रान्ति का आह्वान किया। 'गदर' के प्रकाशन से पूर्व अमेरीका से ही एक छात्र तारकनाथ दास ने 1908 में 'फ्री हिन्दुस्तान', 1909 में गुरुदत्त कुमार ने पंजाबी में 'स्वदेश सेवक' नामक पत्रों का प्रकाशन किया। कालान्तर में लन्दन से शान्ता सोनी द्वारा सम्पादित 'नवीन' उल्लेखनीय है। एस.एन. गौरीसरीया के सम्पादन मे ं 'सन्मार्ग' का प्रकाशन हुआ। पेंडर्स ने 'केसरी', सुकुमार मजूमदार ने 'प्रवासी', जगदीश कौशल ने 'अमरदीप' दैनिक आज के लन्दन स्थित प्रतिनिधि धर्मेन्द्र गौतम ने 'प्रवासिनी' का प्रकाशन किया।

1972 में 'सोवियत संघ' नाम से एक हिन्दी पत्रिका मास्को से प्रकाशित हुई। मारीशस से प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं में 'हिन्दुस्तानी', 'जनता', 'कांग्रेस', 'हिन्दू धर्म', 'दर्पण', 'इंडियन टाइम्स', 'अनुराग', 'महाशिवरात्रि', 'आभा' आदि कई पत्र प्रमुख रहे हैं। मारीशस से प्रकाशित हिन्दी का पहला पत्र 'हिन्दुस्तानी' था। इसका प्रकाशन 1909 में हुआ। इसके प्रथम सम्पादक मणिलाल थे। सूरीनाम से प्रकाशित होने वाले हिन्दी पत्रों मे ं दैनिक 'कोहिनूर', साप्ताहिक 'प्रकाश', 'विकास', 'शान्तिदूत' प्रमुख हैं। नेटाल (दक्षिण अफ्रीका) से 1910 में 'अमृतसिन्धु' मासिक भवानी दयाल के सम्पादन में प्रकाशित हुआ। डरबन शहर से 1916 में 'धर्मवीर' साप्ताहिक का प्रकाशन हुआ। डरबन से ही 'हिन्दी' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई। 1950 में त्रिनिनाद से शिवप्रसाद के सम्पादन में 'आर्यसंदेश' का प्रकाशन हुआ। 1904 में डरबन से ही 'इंडियन ओपीनियन' मदनजीत के सम्पादन में प्रकाशित हुआ। यह पत्र भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता रहा। बर्मा से 'प्रखर प्रकाश', 'जागृति', 'ब्रह्म भूमि' का प्रकाशन हुआ था। अविभाजित भारत में ढाका से 1871 में 'विहार बंधु' 1880 में 'धर्मनीति', 1888 में 'विद्या धर्म दीपिका', 1904 में 'नारद', 1905 में 'नागरी हितैषी', 1911 में 'तत्त्वदर्शन', 1939 में 'मेल मिलाप' प्रमुख रहे हैं। इसी क्रम मे ं जैसोर से 'अमृत बाजार पत्रिका' के संस्करण का प्रकाशन उल्लेखनीय है। अविभाजित भारत में लाहौर किसी समय हिन्दी, संस्कृत और पत्रकारिता का गढ़ रहा। यहाँ से 'भारतीय', 'विश्वबंधु', 'आर्य बन्धु, 'आर्य', 'आर्य जगत', 'शांति', 'सुधाकर', 'क्षत्रिय', 'मित्र विलास', 'बूढ़ा दर्पण', 'आकाशवाणी' आदि पत्र प्रकाशित हुए। 1914 में श्री सन्तराम के सम्पादन में 'आर्यप्रभा' का प्रकाशन हुआ। 1914 में ही लाहौर से एक पत्रिका श्री सन्तराम के सम्पादन में 'उषा' का प्रकाशन हुआ। 1927 में 'हिन्दी मिलाप' का प्रकाशन शुरू हुआ। 23 सितम्बर 1949 में 'मिलाप' पुनः जालंधर से शुरू हुआ। इनके अलावा आज भी कई लोग विदेशों में रह कर हिन्दी पत्रों का प्रकाशन कर रहे हैं।

1.4 स्वतंत्रता पूर्व भारत की पत्रकारिता

भारत में पत्रकारिता का आरंभ मुद्रण कला के आगमन के बाद माना जाता है। मुद्रण कला के

आने के बाद प्रकाशन कार्य, पुस्तकें, साप्ताहिक और बाद में दैनिक समाचारपत्र का प्रकाशन विभिन्न स्तरों पर होने लगा । ज्ञात हो कि मुद्रण कला का आरंभ जर्मनी और यूरोप में पहले हुआ। विद्वानों का मत है कि भारत में मुद्रण कला का आगमन 6 सितम्बर 1556 में हुआ। वस्तुतः ईसाई धर्म के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से यह कला भारत में आई। इस प्रकार भारत में मुद्रण कला के माध्यम से प्रकाशन कार्य की जन्म भूमि गोवा को माना जा सकता है। मुद्रण कला सीखने–सिखाने की लम्बी यात्रा के बाद सोलहवीं सदी में गोवा में लगभग 13 पुस्तकों के प्रकाशित होने के प्रमाण मिले हैं। इसी तरह मुंबई में भी गोवा की तरह मुद्रण कला को विकसित करने के प्रयत्न किए गए। तत्कालीन महाराजा शिवाजी ने भी एक प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की थी किन्तु; लम्बे समय तक उपयोग में न आने के कारण इसे 1674 में भीमजी पारेख नामक एक व्यापारी को दे दी। भीमजी पारेख ने भारतीय भाषाओं खासकर देवनागरी और गुजराती भाषा में मुद्रण कार्य करने के अनेक प्रयत्न किए ।

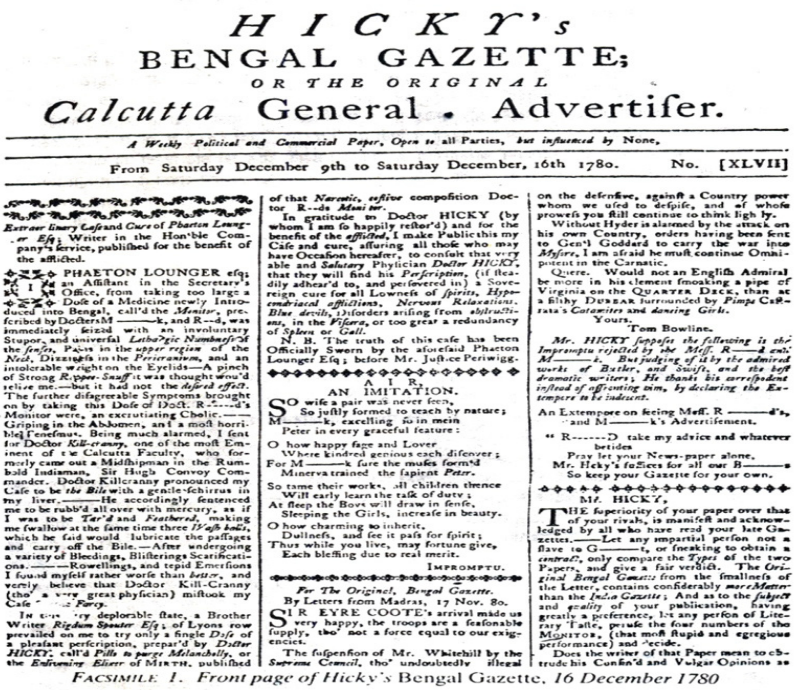

HICKY's
BENGAL GAZETTE;
OR THE ORIGINAL
Calcutta General Advertiser.

A Weekly Political and Commercial Paper, Open to all Parties, but influenced by None,

From Saturday December 9th to Saturday December, 16th 1780. No. [XLVII]

FACSIMILE 1. *Front page of Hicky's* Bengal Gazette, *16 December 1780*

भारत में समाचारपत्र के प्रकाशन के लिए मुद्रण की तकनीक प्रेरणा बनी और एक अंग्रेज जेम्स आगस्ट हिक्की ने 29 जनवरी 1780 में भारत का पहला पत्र ''बंगाल गजट ऑफ कलकत्ता जनरल एडव्हरटाईजर'' नाम से प्रकाशित किया। हिक्की ने अपने पत्र के माध्यम से हेस्टिंग्स प्रशासन की त्रुटियों की आलोचना भी की । कदाचित् भारत में पत्रकारिता की सही भूमिका का आरंभ भी इसी पत्र से हुआ। अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध आवाज उठाने वाले हिक्की को अंग्रेजों का कोपभाजन बनना पड़ा और उन्हें जेल की यातना सहनी पड़ी। 1785 से प्रकाशित हो रहा 'बंगाल जरनल' सत्ता समर्थक था; किन्तु हिक्की से प्रभावित होकर एक उत्तरी अमेरीका मूल के अन्य विदेशी पत्रकार विलियम हुआनी ने जब 1791 में इसके सम्पादक का पदभार ग्रहण किया तब से इसका स्वर बदल गया। हुआनी की आक्रामक छवि के कारण तत्कालीन सरकार ने उन्हें भारत से निष्कासित कर दिया।

भारतीय भाषा में पत्रकारिता के लिए राजाराम मोहन राय को पत्रकारिता का स्तंभ कहा जाता है। उनके प्रयासों से 1818 में 'बंगाल गजट' और 1820 में 'संवाद कौमुदी' तथा बाद में 'मिरातुल' अखबार भी प्रारंभ हुए। उन्होंने ताराचन्द दत्त और भवानीचरण बनर्जी के संपादन में बांग्ला भाषा में पहला देशी पत्र ''संवाद कौमुदी'' का प्रकाशन किया। इसमें भी अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध आवाज उठाई। परिणामस्वरूप सरकार का दबाव बढ़ने लगा और पत्रकारिता पर अंकुश और बढ़ाया जाने लगा। फलतः 4 अप्रैल 1823 को राजा राम मोहन राय ने इस पत्र का प्रकाशन रोक दिया। संक्षेप में कहें तो भारतीय पत्रकारिता को आरंभ से ही संघर्ष का सामना करना पडा। इस काल में भाषाई पत्रकारिता अनेक रूप में जनता के सम्मुख हुई और आतताइयों के कारण ठप होते रहने का दौर जारी रहा। हालांकि बंगाल शिक्षा और पत्रकारिता के क्षेत्र में अग्रणी रहा; किन्तु मुंबई और मद्रास (वर्तमान में चैन्नई) से भी कई पत्र प्रकाशित हुए। एक अनुमान है कि इस आरंभिक काल में कलकत्ता, मुंबई और मद्रास से 15 पत्रों का प्रकाशन हुआ।

उदन्तमार्तण्ड

हिन्दीके सर्वप्रथम समाचार पत्र 'उदन्त-मार्तण्ड'के प्रथम अंकके मुखपृष्ठकी प्रतिलिपि

हिन्दी का पहला पत्र ''उदन्त मार्तण्ड'' 30 मई 1826 को कलकत्ता से पं. युगल किशोर शुक्ल ने प्रकाशित किया। अनेक चुनौतियों और संघर्षों के उपरांत 4 दिसम्बर 1827 को ''उदन्त मार्तण्ड'' की यात्रा भी समाप्त हो गई।

इस पत्र के बाद भारतीय पत्रकारिता में एक बार फिर क्रान्ति का सूत्रपात हुआ और समय–समय पर अनेक पत्रों का प्रकाशन हुआ। पत्रों के आरंभ होने और बंद होने के इस दौर में हिन्दी का दैनिक पत्र ''समाचार सुधावर्षण'' का आरंभ कलकत्ता से 1854 में हुआ। इसका संपादन श्यामसुन्दर सेन ने किया। बाद में यह पत्र हिन्दी और बांग्ला दो भाषाओं में प्रकाशित होने लगा। इस पत्र के 1868 तक प्रकाशित होने के प्रमाण मिलते हैं। 1829 में एक बार फिर राजाराम का पत्र ''बंगदूत'' का प्रकाशन हुआ।

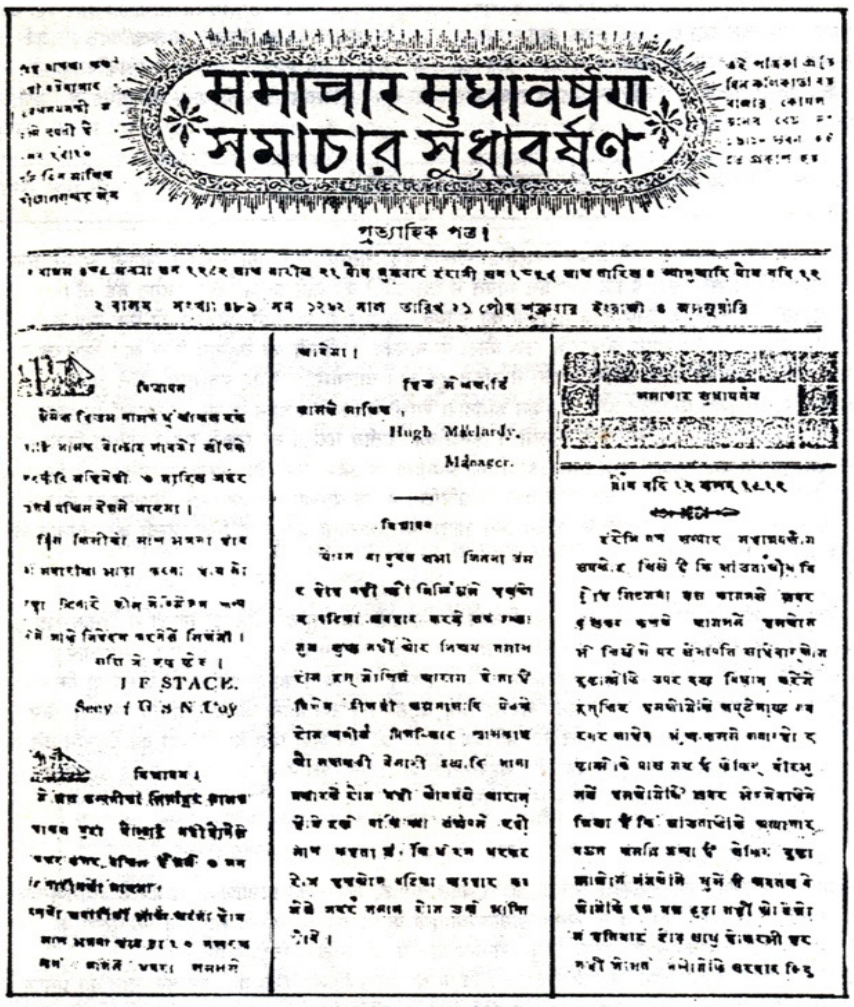

समाचार सुधावर्षण

साप्ताहिक पत्र।

समाचार सुधावर्षण

(6)

हिन्दी भाषी क्षेत्र से प्रकाशित होने वाला पहला हिन्दी पत्र ''बनारस अखबार'' 1845 में प्रकाशित हुआ था। इस पत्र के संपादक मराठी भाषी रधुनाथ थत्थे थे; किन्तु पत्र के प्रधान शिवप्रसाद सितारे हिन्द का ही वर्चस्व था। सितारेहिन्द हिन्दुस्तानी के पक्षपाती थे। 1846 में कलकत्ता से प्रकाशित ''मार्तण्ड'' को भी हिन्दी में प्रकाशित किया जाने लगा। 1848 में इन्दौर से हिन्दी और उर्दू में ''मालवा समाचार'' का प्रकाशन किया गया। 1850 में बनारस से बांग्ला और हिन्दी में ''सुधाकर'' नामक पत्र का प्रकाशन किया गया।

बंगाल को छोड़कर पूरे भारत में नवजागरण इसी 19वीं सदी में प्रारंभ हुआ। रेल, तार– डाक, शिक्षा, प्रेस और समाचार पत्रों की शुरुआत इसी सदी में हुई। प्रेस और पत्रकारिता से एक ओर जहाँ विचार स्वातंत्र्य की नींव पड़ी वहीं आधुनिक व्यवस्थाओं और आधुनिक शिक्षा की व्यवस्था में जनजागृति आई। सन् 1857 के बाद पूरे भारत पर अंग्रेजों का शासन हो गया और भारत ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों से निकलकर विक्टोरिया के हाथों में आ गया। फलतः बढ़ती दमनकारी नीतियों के कारण अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भिन्न प्रकार के खतरों में पड़ गई। उपनिवेशवाद के चलते जहाँ भारत आर्थिक रूप से कमजोर हुआ वहीं दूसरी ओर सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक प्रगति की ओर अग्रसर भी हुआ।

19 वीं सदी में भारत में पत्रकारिता में आई चेतना जब सत्ता के विरुद्ध अपनी आवाज उठाने लगी तो सरकार और सरकारी अधिकारियों की आलोचना करने वाले पत्रों पर अंकुश लगाने के लिए उन्होंने कई कड़े नियम बनाए। लार्ड वेलेजिली के समय पहला प्रेस संबंधी कानून बनाया गया जिसमें एक शर्त यह भी थी कि सरकारी अधिकारी के निरीक्षण के बिना कोई भी पत्र प्रकाशित नहीं किया जाएगा। वेलेजली के बाद आए लार्ड हेस्टिंग्स ने प्रेस एक्ट में कुछ संशोधन किया पर नियम फिर भी कड़े थे। हेस्टिंग्स के बाद एडम ने कमान अपने हाथ में ली, वह और भी कठोर था। 14 मार्च 1823 को उसने नए प्रेस कानून लागू किए जिनके अन्तर्गत कोई भी व्यक्ति बिना लाइसेंस के कोई पत्र नहीं निकाल सकता था। इस प्रेस एक्ट के विरोध में राजा राममोहन राय ने एक याचिका दायर की। प्रेस एक्ट के खिलाफ यह किसी भारतीय का पहला विरोध था और इसके कारण 4 अप्रैल 1823 को उन्हे अपना 'मिरातुल' अखबार बंद कर देना पड़ा । लार्ड विलियम बैंटिंग के काल में आए चार्ल्स मैटकाफ ने भारतीय पत्रकारिता की स्वतंत्रता के लिए सकारात्मक रवैया अपनाया। मैटेकाफ के प्रयासों से भारतीय समाचार पत्रों पर लगी सभी पाबंदिया हटा दी गईं। हालांकि 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद फिर प्रेस संबंधी कानून और कड़े हो गए।

बीसवीं सदी का प्रारंभ नए संकटों के बीच चेतना जाग्रत होने से हुआ। लार्ड कर्जन ने भारतीय चेतना को खत्म करने के लिए दमनकारी नीति का सहारा लिया। उसने 1905 में बंगाल का विभाजन कर दिया। फलतः उसकी इस नीति का जमकर विरोध हुआ और बंगाल के लोग एकजुट हो गए और राष्ट्रीय आंदोलन की गति और तेज हो गई। सुरेंद्रनाथ बनर्जी, विपिनचंद्र पाल और रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि लोग स्वतंत्रता आंदोलन के साथ–साथ आध्यात्मिक पुनर्जागरण में भी सक्रिय हो गए। बाल गंगाधर तिलक ने इस दौर में 'केसरी' और 'मराठा' नामक पत्र निकाले। 'केसरी' का स्वर उग्र था और 'मराठा' का नरम। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लगभग 20 सालों तक 'सरस्वती' का संपादन किया। इस दौरान हिंदी केसरी, भारतमित्र, नृसिंह, मारवाड़ी बंधु, अभ्युदय, कर्मयोगी, प्रताप, कर्मवीर आदि सभी पत्र देशप्रेम से प्रेरित पत्र थे।

1920 से हिंदी पत्रकारिता के विकास में एक नया मोड़ आया जिसे गाँधी युग भी कहा जाता

है। उन्होंने 'यंग इंडिया', 'नवजीवन' और 'हरिजन' नामक पत्रों का संपादन किया। गाँधी जी ने 'नवजीवन' गुजराती में निकाला। हिंदी में इसका नाम 'हिंदी नवजीवन' था। यह 1921 में प्रकाशित किया गया । हरिजन का नाम हिंदी में 'हरिजन सेवक' था जो 1933 में निकला। इसी तरह यंग इंडिया का हिंदी संस्करण 'तरुण भारत' नाम से हिंदी में निकला। इन पत्रों में विज्ञापन नहीं छपते थे। इन सभी पत्रों ने भारत में सामाजिक और राजनीतिक चेतना के विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। गाँधी जी ने अपनी गहरी समझ, दृढ़ इच्छा शक्ति, सत्याग्रह की अद्‌भुत क्षमता तथा निःस्वार्थ त्याग के माध्यम से कुशल नेतृत्व करके हमारे स्वतंत्रता आंदोलन को एक व्यापक जनाधार दिया। 5 सितम्बर, 1920 को बनारस से 'आज' का प्रकाशन शुरू हुआ जिसके पहले अंक में लिखा गया कि– भारत के गौरव की वृद्धि और उसकी राजनीतिक उन्नति 'आज' का विशेष लक्ष्य होगा। 'आज' के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी पत्रकारिता में दैनिक पत्रों के प्रकाशन का एक नया युग शुरू हुआ। इसी क्रम में कानपुर से 'वर्तमान' निकलने लगा जिसके मुख पृष्ठ पर 'वन्दे मातरम्' शब्द अंकित रहता था। 23, नवम्बर 1920 से प्रताप का भी दैनिक संस्करण निकलने लगा। इस समय के अधिकतर समाचार पत्रों ने देश को तथा युवकों को असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। बंगाल विभाजन और जलियाँवाला बाग जनसंहार के कारण हिन्दी पत्रकारिता अत्यधिक उग्र हो गई थी किन्तु उन पर बापू के विचारों का इतना व्यापक प्रभाव था कि क्रांतिकारी पत्रों तक ने अहिंसात्मक रवैया अपनाया। इस दौरान पं0 सुन्दर लाल, गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे सम्पादकों ने क्रान्तिकारी भावनाओं को उद्वेलित करने वाली कविताएँ लिखीं। इस समय 'देश भक्त', 'हम क्रान्ति करेंगे', 'जीवन संग्राम', 'घबराते क्यों हैं', 'विजय', 'मां' जैसे अनेक क्रान्तिकारी शीर्षकों से लेख, सम्पादकीय और कविताएँ लिखी गईं। 'स्वदेश' का विजय अंक, 'चांद' का फाँसी अंक 'प्रभा' के झण्डा सत्याग्रह अंकों ने इतिहास में अपनी पहचान बनाई है ।

20वीं सदी के प्रारम्भ में जैसे–जैसे समाचार पत्रों की संख्या बढ़ने लगी वैसे–वैसे सरकारी प्रतिबंध भी कड़े होते गए तो फिर सम्पादकों ने संगठित होने की आवश्यकता अनुभव की। हालांकि इस उद्देश्य से पत्रकारों का पहला संगठन सन् 1894 में 'हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि सभा' के नाम से बना था, किन्तु इसका सही रूप 1915 में तब आया, जब प्रेस एसोसिएशन ऑफ इंडिया का गठन हुआ। इसका प्रभाव यह हुआ कि पत्रकार संगठनों के गठन के बाद उनमें एकजुट होकर सरकार से टक्कर लेने की क्षमता पैदा हुई और इस प्रकार पत्र–पत्रिकाओं का स्वर और अधिक आन्दोलनात्मक हो सका और इससे हिन्दी पत्रकारिता का स्तर ऊँचा उठा तथा उनकी स्वतंत्रता काफी कुछ सीमा तक अपेक्षाकृत सुनिश्चित हुई।

भारत छोड़ो आन्दोलन के समय भी हिन्दी पत्रकारिता ने यद्यपि अपने दायित्व को उठाया, किन्तु जबरदस्त सरकारी प्रतिबंधक नीति ने इसे दबोच लिया। फिर भी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों की पत्रिकाओं के माध्यम से जनता और विशेषकर नवयुवकों और विद्यार्थियों को जाग्रत रखने का काम जारी रहा। सन् 1945 में जब समाचार पत्रों पर से सेंसर हटाया गया, तब पुनः अपनी ऊर्जा के साथ समाज के सामने आए। इसके बाद के पत्रों ने आजाद हिंद फौज पर अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाएँ प्रकाशित कीं और इस प्रकार देश को 1947 में स्वतंत्रता की सीढ़ी तक पहुँचाने में एक सचेत सैनिक की भूमिका निभाई।

1.5 राजस्थान की पत्रकारिता का इतिहास

समकालीन समाज को प्रतिबिम्बित करने और राजनीतिक, सांस्कृतिक गतिविधियों को अभिव्यक्ति देने में समाचार पत्रों की प्रभावी भूमिका को एक स्वर से स्वीकार किया जाता हैं। भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में भी इन समाचार पत्रों का इसी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण योगदान रहा हैं। वस्तुतः

राजस्थान के स्वाधीनता सैनानियों को दोहरी लड़ाई लड़नी पड़ी। एक ओर इन्हें जागीरदारों– सामन्तों के अत्याचारों व शोषण से संघर्ष करना पड़ा तो दूसरी ओर अंग्रेजी शासन से लोहा लेना पड़ा। सच तो यह हैं कि इन समाचार पत्रों ने ही यहाँ के स्वाधीनता सेनानियों का मनोबल, उत्साह व साहस को बनाए रखा। उस समय आज की तरह न तो आकाशवाणी थी और न ही दूरदर्शन, जिससे इन्हें प्रतिदिन के ताजा समाचार उसी क्षण मिल जाते। इन स्वाधीनता सेनानियों को तो देश भर के विविघ समाचार व स्वतंत्रता आन्दोलन की घटनाओं की जानकारी इस समाचार पत्रों से ही मिलती और वे उसी आधार पर अपनी रणनीति बनाते।

राजस्थान के अधिकतर समाचारपत्र, पत्रिकाओं ने विविध व्यवधान और साधन सीमाओं के बावजूद अपने दायित्व को निष्ठापूर्वक निभाया है। स्वाधीनता से पहले समाचारपत्रों का उद्देश्य राजनीतिक जनजागृति का विकास करना था। राजस्थान समाचार, तरुण राजस्थान, नवीन राजस्थान और राजस्थान जैसे समाचारपत्रों ने देशी रियासती शासन के अत्याचार और दमन के विरुद्ध समाचार प्रकाशित किया। यही नहीं इसके लिए पत्रों द्वारा देशभक्ति पूर्ण कविताएँ और कहानियाँ भी प्रकाशित करते थे हरिश्चन्द्र चंद्रिका और मोहन चंद्रिका संदर्भ, स्मारक, अग्निबाण, प्रभात, नवज्योति नवजीवन, प्रजासेवक जयभूमि, प्रचार और लोकवाणी आदि पत्रों ने राजनीतिक चेतनामूलक देशभक्तिपूर्ण रचनाओं ओर विचारों को प्रकाशित किया।

1.6 सारांश

समाचारपत्रों के भारत के इतिहास की कहानी बड़ी रोचक है क्यों कि अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष और स्वाधीनता और समाजोत्थान के लिए समाचारपत्रों का प्रकाशन निश्चय ही दुरूह कार्य था। एक मिशन के साथ समाचारपत्रों का प्रकाशन करना तथा ध्येय में सिर्फ आजादी को रखना अपने आप में गौरवशाली है। राजस्थान में भी पत्रकारिता का जन्म आन्दोलन की कोख से ही हुआ।

शब्दावली

याचिका– प्रार्थना

1.7 अभ्यास प्रश्न

1 – विश्व में पत्रकारिता का आरंभ कहाँ से हुआ ?
2 – विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता का जन्म कब हुआ?
3 – भारत में पहला प्रिटिंग प्रेस कहाँ स्थापित हुआ था ?
4 – उन्नीसवीं सदी भारतीय पत्रकारिता में क्यों महत्त्वपूर्ण है ?
5 – हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में गाँधी युग कब शुरू हुआ ?
6 – स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी पत्रकारिता का सबसे सकारात्मक पहलू क्या है?